लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

website: www.pawanprawah.com

पवन प्रवाह

सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह

डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2015-17

वर्ष 04 अंक 08 लखनऊ। सोमवार 13 से 19 नवम्बर-2017

e-mail-pawanprawah@gmail.com

मूल्य : तीन रूपये पृष्ठ-16

प्राणिक ऊर्जा : विशिष्ट उपचार

लेखक डॉ. भरत राज सिंह

स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

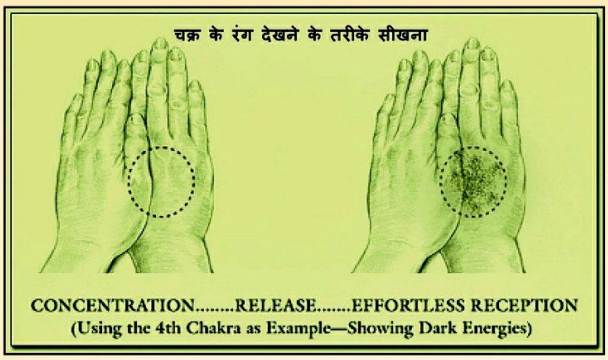

(भाग-25)

पिछले 24 (चौबीस) अंकों में हमने भौतिक शरीर में ऊर्जा का संचार व उससे उत्पन्न ऊर्जा (आभा), जो भौतिक शरीर के कुछ क्षेत्र तक प्रभावी रहती है तथा प्राण के स्त्रोत, रंग प्राण व उसमें मुख्यतः प्राणिक ऊर्जा (शक्ति) किसे कहते हैं व क्या लाभ हैं, भौतिक शरीर में चक्रों का क्या महत्व है व इससे शरीर की ऊर्जा का संतुलन कैसे प्रभावी होता हैः ऊर्जा (आभा) के परत, उनका महत्व और उससे शारीरिक स्वास्थ्य में, क्या लाभ होगा, तथा शारीरिक रोगों के निदान में प्राणिक उपचार (हीलिंग), ऊर्जा के सात चक्रों को जाग्रित करने के बारे में तथा मौलिक उपचार के लिए स्तर-I व विशिष्ट उपचार स्तर-II में प्रत्यक्ष ऊर्जा के लिए विजुअलाइजेशन व अवरूद्ध चक्र, औरिक ऊर्जा की अशुद्धिया, आभा और चक्रों के गूढ़ ज्ञान, सहज ज्ञान से आभा और चक्रों को पढ़ने की जानकारी से पूर्णतः अवगत हुये थे। इस अंक में, सहज ज्ञान से आभा और चक्रों के पार्दर्शिता आदि के विषय मे क्रमशः आगे बताया गया है।

क्रमशः...

23.4 ग्राउंडिंग: इस स्थिति का उपयोग आभा में ऊर्जा जोड़ने के लिए किया जाता है और रोगी को ग्राउंडिंग में किया जाता है। यह रोगी को ताजगी और संतुलन प्रदान करता है और एक अर्थ में आभा चार्जिंग का एक सरल संस्करण के रूप में सोचा जा सकता है, इस प्रकार आभा में ऊर्जा जुड़ती है और आभा संतुलित होती है। हालांकि, कुछ रोगियों पर आभा चार्ज करने की आवश्यकता होती है, परंतु यह स्थिति सभी के लिए फायदेमंद होती है, खासकर उन लोगों के लिए जिन्हें आप समझते हैं कि पूरी तरह से जमीन से जुड़े (ग्राउंड) नहीं है। ग्राउंडिंग की प्रक्रिया निम्नानुसार किया जाता हैः

आप को अपने रोगी के पैरों की तरफ खड़े हो, क्योंकि रोगी उपचार की मेज पर लेटा है। अपने हाथों को इस प्रकार रखें ताकि आपके हथेलियों के बीच चक्र केंद्रित हो जाएं जो अपने रोगी के पैरों के तलवों के बीच में छोटे चक्र के ऊपर हो। अब रोगी मे ऊर्जा को उसके पैरों के माध्यम प्रवाहित करें, अनुभव करे कि ऊर्जा पृथ्वी से आ रही है, आपके हाथ मे भर रही है और आपके हाथ से रोगी के पैर मे जा रही है और रोगी के पूरे शरीर मे प्रवाहित होकर भरती जा रही है। यह अनुभव करें कि जब आप यह कर रहे हैं तो आपके रोगी और पृथ्वी के बीच मे ऊर्जा का एक जुड़ाव पैदा हो रहा है।

यह एक उपयोगी स्थिति है क्योकि यह आभा मे अतिरिक्त ऊर्जा आती है, आभा के दोनों पक्षों (तरफ) को संतुलित करती है और रोगी और पृथ्वी के बीच एक स्वस्थ लिंक बनाती है। यह विशेष रूप से उन रोगियों पर इस स्थिति को नियोजित करने के लिए उपयोगी है, जो पृथ्वी से ग्राउड नहीं है और यह प्रक्रिया क्रिया मरीज को भौतिक दुनिया से जोड़ने का आधार प्रदान करती है।

23.5 स्पाइन सफाई: एक केंद्रीय ऊर्जा चैनल है जो रीढ़ के साथ चलती है-यह ऊर्जा चक्र प्रणाली के माद्यम से आगे बढ़ती है। इसलिए यह ऊर्जा चैनल शरीर ऊर्जा प्रणाली का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस ऊर्जा चैनल को साफ करने और शुद्ध करने से मरीज को लाभ पहुंचता है और इसे रीढ़ की सफाई के रूप में जाना जाता है। स्पाइन सफाई आम तौर पर उपचार के अंतिम दौर में किया जाता है जिसमे मरीज का चेहरा नीचे की ओर झुका रखा जाता है। इसकी विधि नीचे दी गयी है-

अपने दाहिने हथेली को दूसरे(2रे) चक्र के पीछे के हिस्से पर और बाए हथेली को 5वें चक्र के पीछे के हिस्से पर रखे और दोनों हाथो से रोगी में ऊर्जा भेजें। जब आप ऊर्जा भेज रहे हैं, कल्पना करें और देखे कि रीढ़ की हड्डी में दोनों दिशाओं से ऊर्जा प्रवाहित होकर ऊपर और नीचे से इसे साफ़ कर रही है। प्रत्येक हाथ की ऊर्जा उस हाथ की स्थिति से ऊपर और नीचे होते हुए दोनों तरफ चलती है और जहां यह ऊर्जा मिलती है, वह समाप्त नहीं होती है, लेकिन केंद्रीय ऊर्जा चैनल को धोने और सफाई करने में दोनों दिशाओं में जारी रहती है।

स्पाइन सफाई बहुत ही महत्वपूर्ण केंद्रीय ऊर्जा चैनल की एक विकिरण की सफाई है और एक उत्कृष्ट अंतिम इलाज की स्थिति है।

23.6 अंतिम उपचार: ऊर्जा के अंतिम उपचार में कुछ देर खड़े होकर और अनुभव करे कि ऊर्जा का प्रवाह बंद हो रहा है। अनुभव कीजिये कि ऊर्जा प्रवाह बंद हो गया तथा शांत हो गया। अब सर्किल का अनुभव कीजिये कि ऊर्जा का प्रवाह शांत हो गया है। यह उपचार के पूर्ण होने की भावना प्रदर्शित करता है और प्रारम्भिक बिन्दु पर वापस लौटने की स्थिति तथा सर्किल को सार्वभौमिक ऊर्जा के प्रवाह में जुड़ने की श्रद्धांजलि देता है।

24.0 चक्रों के रंगों को देखने की विधि: एक सूक्ष्म अभ्यास के रूप में, यदि हम चाहें, तो अपने रोगी की स्थिति की जानकारी देने के लिए चक्रों के रंगों को देखने की कोशिश कर सकते हैं। यह अभी तक किये गये अभ्यास अथवा अनुभव का एक वैकल्पिक कदम है। इस प्रक्रिया में उपचार को प्रभावी करने के लिए चक्र रंगों को देखने का प्रयास करना आवश्यक नहीं है, फिर भी आपके कोशिश करने पर एक दिलचस्प तकनीक मिल सकती है। जैसा कि आप जानते हैं, सात प्रमुख चक्रों में से प्रत्येक का एक सही रंग है, जो कि चक्र के पहलवे (1वे) लाल से सातवे (7वे) वैगनी तक है। सातों चक्र जब स्वस्थ होते हैं तो उनके विभिन्न रंग गहरे व चमकीले दिखते हैं। हालांकि, रोगग्रस्त चक्रों में कोई-कोई चक्र रन्गहीन, फीका पड़ा हुआ, पानी की बूंदों से धुंधला या streaked होने की स्थिति दर्शाता है। इस तरह से दोषपूर्ण दिखाई देने वाला चक्र में ऊर्जावान कार्यों हेतु कमी होने से अतिरिक्त उपचार की आवश्यकता होती है। रोगग्रस्त चक्रों में, इस तरह के अंधेरे क्षेत्रों का दिखाई देना एक आम बात है, जिसमे रंग या उसकी छाया, रोगी का उपचार करने वाले को अपील नहीं करता हैं। इस तरह से आभा के साथ, स्वस्थ और आकर्षक दिखने वाले रंगों में स्वस्थ स्थितियों का संकेत मिलता है, और अदृश्य और अस्वास्थ्यकर दिखने वाले रंग अशुद्धियों और अवांछनीय परिस्थितियों का संकेत देते हैं। निम्न तकनीक से चक्रो के रंग देखने की प्रक्रिया सीखना बताया गया हैः

शरीर के अग्रभाग पर हाथ की स्थिति सामान्य रूप मे करते हुए, पहले अपने मन की आंखों में, अपने स्वयं के हाथ की ऊपरी त्वचा पर चक्र के सूक्ष्म रंग को देखें, जैसा कि आप प्रत्येक चक्र का इलाज के समय करते हैं। इस प्रकार से देख कर चक्रों का रंग जांचें जाहिर तौर पर आपकी त्वचा में दिखाई देने वाला रंग, रोगी के अपने चक्र क्षेत्र से होगा और आपकी सूक्ष्म दृष्टि से आपकी अपनी त्वचा को उजागर करेगा। यह सहज ज्ञान युक्त अध्ययन के द्वारा देखा जा सक्ता है कि जब आप सूक्ष्म दृष्टि से अपने दाहिने हाथ की हथेली के पीछे की त्वचा पर (जो चक्र में केंद्रित होता है) ध्यान देते हैं और फिर ध्यान हटा लेते हैं, जैसा कि चक्र के रंग को देखने की क्रिया में हाथ को आगे ले जाना व हटा लेना करते हैं, तो आपको दिमाग की आंखों से रंग की छाप उभरती नजर आती है। यह रंग या तो गहरा और काफी शुद्ध अथवा कमजोर, काली या अशुद्धियों के साथ फीका होगा।

आपको दाहिने हाथ के ऊपरी सतह पर पुनः रंग देखने के प्रयास व पुष्टि करने के अभ्यास के दौरान महसूस होने लगेगा, जैसा कि आप आभा को देखने के दौरान करते आये हैं। चक्र रंग की सामान्य स्थिति, कोई भी दोष या discolorations, पहले आप के मन की आंखों मे एक सूक्ष्म अभी तक पहचाना हुए रंग के रूप में दिखाई देंगे और आपके शारीरिक आंखों से भी स्पष्ट रंग दिखेगा। हालाकि, आपको चक्र का स्पष्ट रंग पहले नहीं दिखाई दे सकता है जिसके लिये प्रयास अभ्यास की आवश्यकता होगी। अभ्यास के पश्चात आप चक्र के रंग को, बिना दूर देखे, प्रत्यक्ष रूप से देख सकेंगे, क्योंकि चक्र का रंग आसानी से आपकी मानसिक दृष्टि से दिखाई देता है। चक्र के मूल रंग के अलावा अन्य रंग भी दिखाई देते है। आपको चक्रों के रंगों और उनके उनके प्रभाव के बारे में अति सूक्ष्म उपचार विधि-स्तर III (तीन) मे सीख सकेंगे।

यदि आप चाहें, तो उपचार मे शामिल करने के लिए यह एक अच्छी तकनीक है। संक्षेप में, प्रत्येक चक्र के रंग का आकलन करें, जैसा कि आप सामान्य क्रम में करते हैं। आपको चक्रों के रंगों के स्थिति का अनुभव होगा, शायद जब आप अपने हाथों को, अशुद्ध रंग के संकेतों के साथ, चक्र के विभिन्न स्तरों (पदों) पर ले जाते हैं। उन चक्रों जो एक हल्के रंग का परछाई दिखाते हैं, उनके रंग को बहाल करने के लिए, हाथ में प्लेसमेंट के दौरान अतिरिक्त ऊर्जा के साथ इलाज किया जाना चाहिए। आप रंग में बदलाव को देखने में सक्षम हो सकते हैं, और इसे पुनर्स्थापित करने के लिए काम कर सकते हैं।

जब आपको चक के रंगों के बारे में और अधिक अनुभवी हो जाते हैं, तब प्रारंभिक मूल्यांकन के दौरान, रोगी के मानसिक स्थिति और सुझाव व उसाके क्षेत्र पर पड़ती छाया से, इस तरह की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। आप अपने को चक्र रंगों के अनुभव के लिए खुला रखे और आपको विभिन्न बिंदुओं पर उपचार के दौरान यह जानकारी प्राप्त होती रहेगी। इस प्रकार आप अपने सभी आकलनों को, चक्रों की स्थिति के साथ, पूर्णतः जोड़े और तदनुसार इलाज करें।

25.0 चिकित्सा मे प्रकाश का उपयोग करना: यदि आप चाहें, तो आप अपने ऊर्जा उपचार में, प्रकाश के उपयोग को शामिल करना शुरू कर सकते हैं। यह एक अतिरिक्त वैकल्पिक व्यवस्था उनके लिये है जो चिकित्सक प्रकाश का उपयोग नहीं करते हैं, फिर भी बहुत लाभकारी उपचार देते हैं। यद्यपि यह संभव है, जब आपके पास पहले से ही प्रकाश का उपयोग करने की इच्छा है तथा जब ऊर्जा संचारित करते समय प्रकाश को भी देखना शुरू कर दिया हो। यदि आपको लगता है कि यह आपके लिए स्वाभाविक उपयोग करने के लिए है-आपको इसके लिये लगाव महसूस हो रहा है-तो आपके लिये इसका उपयोग उपचार मे फायदेमंद होगा।

जब आप सामान्य चक्रों के पदों पर कार्यवाही प्रारम्भ करते हैं, तब आप अपने हाथों मे प्रकाश रूपी बादल का अनुभव करें। प्रकाश आपके दिमाग की आंखों में या तो एक पीले सफेद, पीला रोशनी या पीले-नीले रोशनी का हो सकता है। इनमें से जो भी आप के लिए प्राकृतिक लगता है, का प्रयोग करें। प्रकाश हाथ से नहीं आते हैं, बल्कि अपने हाथों के चारों ओर प्रकाश की एक परत के रूप में और अपने हथेलियों के नीचे प्रकाश के बादल के रूप में देखें, इसे धीरे से अपने रोगी के शरीर मे डाले। इस तरह अपनी दिमांग की आखों में, पीले प्रकाश को हाथों के आस-पास व हाथो के नीचे अनुभव करते हुये, ऊर्जा को रोगी मे प्रवाहित करें। इस तरह से प्रकाश की कल्पना करने से अपनी शक्ति और ऊर्जा को एक लाभकारी तरीके से स्थानांतरित करने की क्षमता में वृद्धि होती है। ऊर्जा के संचालन के समय मस्तिस्क को खुला रखना सुनिश्चित करें, जब आप प्रकाश की कल्पना करते हैं- दोनों कार्यों को एक साथ करें। यदि आप सहज महसूस करते हैं, तो आप अन्य चीजो के लिए भी प्रकाश का उपयोग कर सकते हैं, साथ ही-ऐसा करने में प्रत्येक सामान्य चक्र की स्थिति पर प्रकाश देखने के बजाय, आप आभा और चक्रों में कुछ ऊर्जावान दोषों को ठीक करते हुए, प्रकाश का उपयोग करना शुरू कर सकते हैं। ऐसा करने से, आप जिन तकनीकों को लागू करेंगे, वह अधिक प्रभाव डालेंगी।

शेष अगले अंक भाग-26 में पढ़े...